THE ART OF LIVING

कर्मयोग — YOUTH LEADERSHIP TRAINING PROGRAM

द आर्ट ऑफ लिविंग अन्तर्राष्ट्रीय केंद्र, बंगलूरु

सेवा टाइम्स

सीएसआर के लाभ प्राप्त करना

''दान करना अब केवल चेक बांटना नहीं रहा, बल्कि सही समय पर जरूरतमंदो तक सही तरह की मदद सुनिश्चित करने का एक संरचित तरीका है।''

पेज 2

मान तालुका का जल संकट हुआ दूर

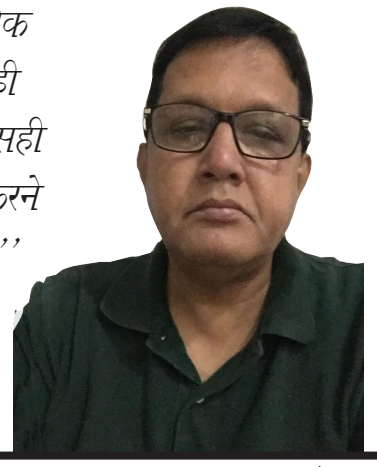

आर्ट ऑफ लिविंग का जल संरक्षण परियोजना इस क्षेत्र के २२,००० से अधिक कृषकों की पानी की समस्या भी हुई दूर

पेज 3

कर्मयोग समागमः पश्चिम बंगाल में ग्रामीण युवा प्रतिनिधियों का अभिनंदन

८०० गांवों से आये लगभग १२००० युवा प्रतिनिधियों ने ग्रामीण विकास पर गुरूदेव से मार्गदर्शन प्राप्त किया।

| तोहेजा गुरुकर

कोलकाता (पश्चिम बंगाल)। गुरूदेव श्री श्री रविशंकर ने १ दिसम्बर २०१९ को कोलकाता के नेताजी इंडोर स्टेडियम में हजारों की संख्या में पहली बार एकत्रित हुए आर्ट ऑफ लिविंग पश्चिम बंगाल के ग्रामीण प्रतिनिधियों को सम्बोधित किया। अपने अद्‌भुत तरीके से गुरूदेव ने युवाओं को नई भावना के साथ देशभक्ति से भर दिया तथा उनका मार्गदर्शन किया कि किस प्रकार से एक भयमुक्त स्वस्थ्य समाज एवं ऐसे राष्ट्र का निमार्ण किया जा सकता है। जहाँ पर विभिन्न संस्कृतियों एवं धर्मो वाले लोग परस्पर सद्‌भाव एवं भाई चारे से रह सकते हैं। पशुपाल, मछली पालन विभाग के मंत्री श्री प्रताप सारंगी भी इस अवसर पर मौजद थे। उन्होंने भी युवाओं को प्रेरित किया तथा जोश से भर दिया।

गुरूदेव के मार्गदर्शन में आर्ट ऑफ लिविंग के व्यक्ति विकास केन्द्र ने समय-समय पर ग्रामीण भारत के विकास की दिशा में कदम उठाए, जिसके बिना एक राष्ट्र के रूप में भारत के विकास कल्पना नहीं की जा सकती है। प्रोजेक्ट भारत भी एक ऐसा ही सामाजिक अंदोलन है। जिसके अन्तर्गत भारत के ६४९,४८१ गांवों से पाँच प्रतिनिधियों को नेता के रूप में तैयार करने का विचार किया गया है। जिससे वह अपने अपने गाँव के विकास की जिम्मेदारी स्वयं अपने कंधे पर लें सकें।

इस महत्वपूर्ण कार्य के विषय में अपने सम्मुख उपस्थित युवाओं से बात करते हुए गुरूदेव ने कहा ''आज दुनिया हिंसा एवं अवसाद से ग्रस्त है। एक ओर लोगों में आक्रामकता का भाव है तो दूसरी ओर अवसाद का। इन दोनों समस्याओं से बाहर आने के लिए उसी प्रकार की अध्यात्मिक जागरूकता की लहर की अवश्यकता है, जो १२ वीं सदी में चैतन्य महाप्रभू के समय में प्रचलित थी। उस समय में सब जगह लोगों के परस्पर प्रेम एवं स्नेह था। उनमें सौहार्द का भाव एवं एक दूसरे के काम आने की इच्छा थी। इस प्रकार के भाव आज भी हमारे समाज में मौजूद हैं। यही कारण है कि आप सब लोग आज इस प्रकार उपस्थित हुए है। गुरूदेव ने तब विस्तार में बताया कि कैसे हमारे देश का विकास गांव के विकास के साथ जुड़ा है। गांव के विकास के बिना भारत राष्ट्र विकास नही कर सकता। ''हमारे देश के प्रत्येक गांव का विकास होना चाहिए। हमारे ग्रामीण युवा उत्साह से भरपूर होने चाहिए। उनमें परस्पर मैत्रीय होनी चाहिए। किसी भी प्राकर के कलह एवं झगड़े का समाधान तत्काल हो जानी चाहिए। वे जिला अदालत अथवा उच्च न्यायालय में जाने की आवश्यकता न हो। प्रोजेक्ट भारत में मैं ऐसी ही सद्‌भावना पूर्ण वातावरण की सृजन करना चाहता हूँ।''

प्राचीन भारतीय परम्परा के अनुसार प्रत्येक गाँव से चुने गये इन पाँच प्रतिनिधियों तुलना करते हुए गुरूदेव ने कहा '' पाँच देवताओं की तरह -गणपति, दुर्गा, शिव विष्णु एवं सूर्य के समान हमें प्रत्येक गांव के पाँच ऐसी मनोस्थिती वाले पाँच प्रतिनिधि चाहिए। उनमें से एक मँ दुर्गा के समान महिला होनी चाहिए। एक गणपति की तरह विघ्नहर्ता, एक भगवान विष्णु की तरह अर्जित को संचित करने वाले, महादेव शिव की तहर परिवर्तन लोने वाले एवं एक सूर्य देवता के समान सतत् गतिमान तथा महाचिन्तक होने चाहिए। गुरूदेव ने आगे कहा कि वह चाहते है कि आर्ट ऑफ लिविंग चाहता है कि इन लोगों को इस प्रकार से तैयार किया जाय कि ये लोग परिवर्तनकारी एंव शान्तिदूत बनें। उन्हें मध्यस्थता का प्रशिक्षण दिया जायेगा तथा कोई भी युवा बेराजगार न रहे इसे सुनिश्चित करें।

गुरूदेव ने अपनी इच्छा व्यक्त की कि वह सन २०२१ में आर्ट ऑफ लिविंग की ४० वीं वर्षगांठ के पूर्व सम्पूर्ण भारत में भक्ति एवं अध्यात्मिकता की लहर देखना चाहते है। अभी तक पश्चिम बंगाल के ४० हजार गांवों में से ८०० प्रतिनिधि नियुक्त किये जा चुके है। यद्यपि रास्ता लम्बा है, पर उपस्थित लागों के उत्साह को देखते हुए यह सपना असम्भव नहीं है।

जल समस्या के निवारणार्थ नेताओं के एक जुट होने का अद्‌भुत अभियान

|सेवा टाइम्स नेटवर्क

आर्ट ऑफ लिविंग ने आईटीवी नेटवर्क के साथ एक अत्यंत शक्तिशाली प्रोग्राम के लिए हाथ मिलाया है, जिसका उद्‌देश्य है जल युद्ध और शहरों के भविष्य के लिए बातचीत एवं जल संरक्षण और प्रबन्धन की आवश्यकता के प्रति कार्य करना ताकि आसन्न जल संकट से निपटा जा सके। यह अयोजन १६ दिसम्बर २०१९ को आर्ट ऑफ लिविंग के अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र बेंगलुरू के विशालाक्षी मंडप में गुरूदेव श्री श्री रविशंकर की उपस्थिति में हुआ। जिसमें अन्य उपस्थित गण थें, भारत सरकार के जल शक्ति विभाग के मंत्री गजेन्द्र शेखावत,दक्षिण बेंगलुरू के लोकसभा सदस्य तेजस्वी सूर्या, इजराइल अम्बेसी के डिप्टी काउन्सिल जनरल एरियल सीडमैन, नदी कायाकल्प कार्यक्रम के निदेशक डॉ लिंगराज याले एवं अन्य कई लोग जो पूरी सक्रीयता से जल कार्य में लगे हुए हैं। आर्ट ऑफ लिविंग पूरे देश में ४२ नदियों एवं उनकी सहयोगी नदियों और छोटे जलाशयों के पुनर्जीवन के लिए व्यापक स्तर पर कार्यकर रहा है। एक सीघ्रता से बढ़ रहें खबरे एवं सूचना देनेवाले आईटीवी नेटवर्क ने 'आखिरी बूॅद' के नाम से जागरूकता अभियान के लिए १०० करोड़ रूपये आईएनआर देने का वादा किया है। इस अभियान का उद्‌देश्य है कि पूरे भारत के लोगों को जल की आवश्कता एवं उसके संचयन के लिए आवश्यक कदमों के विषय में संवेदनशील एवं जागरूक बनाना है। इस सहयोगी प्रयास को आम आदमी को द्वार तक लाने के लिए तथा व्यापक परिणाम लाने के लिए एक नागरिक अधिकार पत्र पर गुरूदेव श्री श्री रविशंकर एवं आईटीबि नेटवर्क से संस्थापक कार्तीकेय शर्मा द्वारा हस्ताक्षर किया गया एवं इसे प्रचारित किया गया।

गुरूदेव ने कहा जब हमारे जल, वायु, धरती एवं मन शुद्ध हो जायेगा, तो भारत देश विश्व का सबसे शक्तिशाली देश बनने की सामर्थ पा लेगा। उन्होंने वृक्षारोपण, प्राकृतिक कृषि, भूमिगत जल को स्वच्छ रखने पर बल दिया। लोगों को आगे बढ़ने एवं स्वयंसेवक बनने को कहा ताकि उनमें इस कार्य के लिए अपनेपन का भाव आये तथा नदियों एवं जलाशयों का कायाकल्प एवं संचयन कार्यों के बजट में भी कमी आये। उन्होंने इस ओर भी संकेत दिए कि लोग अपनी जिम्मेवारी समझें एवं धार्मिक कार्यो के लिए भी नदियों के पवित्र जल में साड़िया एवं चूड़ि न डालें। जल शक्ति मंत्री ने कविता की भाषा में इस बात को समझाया की यह पृथ्वी हमारे पास एक बहुत बड़ा डैम तथा जलाशय है तथाा भूमिगत जल को बढ़ाने के लिए हमें अपने प्रयास बढ़ाना चाहिए। जैसा की उन्होंने हालही में कहा है कि भारत के पास जल संचयन की २५० मिलियन क्यूबिक मीटर की क्षमता है, जबकि देश को अन्य श्रोतो से लगभग ३७५ बिलियान क्यूबिक मीटर जल उपलब्ध होता है। तेजस्वी सूर्या ने इस बात पर जोर दिया कि लोग जनता के प्रतिनिधियों से जल संरक्षण के विषय में किये जा रहे प्रयासों के विषय में पूछें और तभी इस समस्या को राजनैतिक ध्यान मिलेगा जो की आज की स्थिति में आवश्यक भी है। एरियल सीडमैन ने भारत एवं इजराल के बीच सहभागिता के विषय में बताते हुए कहा कि यह पूरे विश्व की समस्या है तथा सभी देश मिलकर जानाकरी साझा करें। तथा इस समस्या का समाधान ढूंढे।

इस कार्यक्रम को पद्मश्री सालुमरद थिमक्का जैसे व्यक्तित्व ने अपने उपस्थिति से सम्मानित किया। वह वृक्षारोपण एवं अन्य संगठनों में इस दिशा में किये गये अपने संकल्पित कार्यों के लिए जानी जाती हैं।

सेवा संक्षिप्त समाचार

एनडीएमसी के कूड़े से धनार्जन

गुरुदेव श्री श्री रविशंकर ने २७ नवंबर, २०१९ को नई दिल्ली के गोल मार्केट के राजा बाजार की एनडीएमसी नर्सरी में स्थापित एक टन क्षमता वाले कंपोस्ट प्लांट का उद्‌घाटन किया। इस अवसर पर दिल्ली के उपराज्यपाल अनिल बैजल और एनडीएमसी (नई दिल्ली नगर पालिका परिषद)के अध्यक्ष धर्मेंद्र भी उपस्थित थे। अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली कूड़े से धन अर्जित करने का एक आदर्श उदाहरण है। यह बिना किसी रासायनिक उपचार के हर दिन १,००० किलोग्राम जैविक कूड़े को ३०० किलोग्राम जैविक खाद में बदल देगा। यह भारत में आर्ट ऑफ़ लिविंग द्वारा स्थापित १८ वाँ अपशिष्ट खाद्य संयंत्र है। १४ मंदिरों में, १ दरगाह में और ३ नगरपालिकाओं में लगे हैं।

हरित वारी – पंडहरपुर राजमार्ग के किनारे वृक्षारोपण

विठ्ठल रुक्मिणी मंदिर समिति के सहयोग से आर्ट ऑफ लिविंग ने मंगलवेद- पंडहरपुर राजमार्ग के साथ एक वृक्षारोपण परियोजना 'हरित वारी' शुरू की है। अब तक लगभग ६००० पौधे लगाए जा चुके हैं। परियोजना टीम का नेतृत्व भूविज्ञानी डॉ. अनिल नारायणपेटकर कर रहे हैं

छात्रों को सड़क सुरक्षा में किया जाएगा प्रशिक्षण कार्यक्रम

भुवनेश्वर के उच्च विद्यालयों में सड़क सुरक्षा जागरूकता और प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए भुवनेश्वर के क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय द्वारा आर्ट ऑफ लिविंग को अधिकृत किया गया है।

बिहार के जेलों में बंदियो को बदलता प्रिज़न स्मार्ट

बिहार में जेल विभाग के साथ एक समझौते के तहत, आर्ट ऑफ़ लिविंग ने प्रिज़न स्मार्ट कार्यक्रम के माध्यम से पिछले ८ माह में बिहार के १६ जिलों के २९३८ बंदियों को परिवर्तित किया और उन्हें जीवन में एक नई दिशा दी। संगठन आगामी ३ महीनों में बिहार के १२ और जिलों को कवर करने के लिए तैयार है।

वृक्षारोपण? वृक्ष ठीक से आरोपित करें

| पद्मा कोटी

वृक्षारोपण दशकों से एक लोकप्रीय तरीका है, समाज एवं प्रकृति को वह सब लौटाने का जो उन्होंने हम सब को दिया। आर्ट ऑफ लिविंग में भी वृक्षारोपण के कार्य अकेले एवं बड़ी-बड़ी परियोजनाओं में भी की गई हैं। जहाँ पर संगठित संसाधन प्रबन्धन प्रथाओं के अन्तर्गत हरियाली अनिवार्य थी। परन्तु अन्तर यहाँ है हरियाली कार्यक्रमों के लिए आवश्यक है विशेषज्ञता, विचार विनिमय एवं योजनाबद्धता।

आर्ट ऑफ लिविंग के अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र बेंगलुरू को वृक्षारोपण में मिली हालही की सफलता इसका नमूना है। एक समय बंजर पड़ा पथरीला भूमि आज कड़े संघर्ष से प्राप्त एक अचंभित करने वाला हरियाला स्थान है।

अतीत में पीछे मुड़कर देखें, तो प्रकृति का सम्मान करने की मानव जाति की एक प्राचीन पद्धति रही है। जिसमें संहारक विकास के विरूद्ध वातावरण की रक्षा करने का प्रयास किया जाता है। वृक्षारोपण एवं उसका पोषण करना प्राचीन भारत की एक महत्वपूर्ण परम्परा थी। खुशी की बात है कि समाज ने वृक्षों के महत्व को समझना शुरू कर दिया है तथा हरित क्रान्ती पूरे विश्व में फैल रही है। यद्यपि वृक्ष काटना, जंगली आग एवं जल संकट जैसी चुनौतियां विश्व में आज भी हैं।

संस्था द्वारा ४२ नदियों के पुर्नजीवन योजनाओं से प्राप्त दिल को खुश करने वाली सफलता के साथ-साथ नदियों के तटों पर देशी वृक्षों औषधीय पौधे, इमली, ब्लैकबेरी, कटहल, अंजीर एवं, नीम आदि पौधों के सूनियोजित चयन एवं रोपड़ से भूमिगत जल संरक्षण कार्य भी सुनिश्चित हो गया हैं। कुमुदवती नदी कायाकल्प परियाजना के अन्तर्गत लघुउद्योग द्वारा किसानों को जीवकोपार्जन में भी सहायता मिली है।

वृक्षारोपण तो एक शुरूआत है। आर्ट ऑफ लिविंग के संघटित, प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन की अनेक परियोजनओं के समन्वय कर्ता महादेव गोमारे से इस क्षेत्र में हुए उनके अनुभवों को साझा करें तो वो बताते हैं कि सही तरीके से सही तरीकों के पौधों को लगाना उनके जीवित रहने का मूलभूत कारण हैं। जो जलवायु परिवर्तन से होने वाले संकटो को भी दूर करता है।

वृक्षारोपण कार्य की सफलता के लिए मौसम, मिट्टी की प्रकृति एवं स्थान बहुत महत्वपूर्ण हैं। देशी प्रजाजियां, फलों वाले वृक्ष, फूल एवं औषधीय पौधें अल्प एवं दीर्घकालिक पौधों का आरोपण महत्वपूर्ण है। पौधों को जिन्दा रखने के लिए आवश्यक है कि उनके आसपास खाइयां बनाई जाय, ताकि मवेशी उसे चराई न कर सकें। बड़ें-बड़े क्षेत्रों को हरा भरा रखने के लिए अल्प जल साधनों के बिना भी ड्रिप एग्रिगेशन अत्यंत मुल्यवान सिद्ध हुई। अन्दर एवं बाहर की नर्सरियों के तथा कृषि सम्बन्धित युनिवर्सिटियों से पौधे लेकर गोमारे एवं उनकी प्रतिबद्ध टीम ने दो महत्वपूर्ण कार्य किए। वन विज्ञान एवं कृषि सम्बन्धि वन विज्ञान। कृषि वन विज्ञान के द्वारा उन्होंने महाराष्ट्र के मंझारा एवं तवागा नामक नदियों के कायाकल्प परियोजना के अन्तर्गत २०० से अधिक किसानों की आय में महत्वपूर्ण वृद्धी की। इसके अतिरिक्त सही तरीके से किये गये आरोपण से अभूतपूर्व परिणाम मिलें। एग्रो फॉरेस्टी मॉडल में सहजन (ड्रमस्टिक) एवं फल वाले वृक्षों को समान्य फसल के साथ साथ बो दिया गया। परिणामतः फसल नष्ट होने के सम्भावना को दूर करके किसानों को वर्तमान, मध्यावधि से दीर्घकालिक से मिलने वाली आय प्राप्त हो गई। इससे सम्पूर्ण क्षेत्र की मिलने वाली जैविक विधिता को लाभ पहुँचा। अतिरिक्त बायोमॉस के कारण पक्षी एवं अन्य जीव आकर्षित हुए। भूमि के सूक्ष्म पोषक तत्वों में वृद्धि हुई, तापमान में कमी आई। जमीन में जल को रोके रखने की क्षमता बढ़ी। परिणाम स्वरूप वृक्षों की अधिकता ने किसानों को जल की कम खपत के साथ अधिक आय दी। उल्लेखनीय यह है कि भीषण गर्मी में भी खुले खेतों में उगी घास ने जमीन की दरारों में से निकल रही वृक्षों की जड़ो से सूर्य की सीधी धूप के कारण मर जाने से बचा लिया।

वृक्षारोपण की प्रणाली एवं तकनीक ने आर्ट ऑफ लिविंग के अन्य हरित परियोजनाओं को भी प्रभावित किया है।

आगे का मार्ग स्पष्ट है। हमें जरूरत है कि हम वृक्षो के आरोपण, पोषण एवं संरक्षण के लिए उपयोगी सिद्धान्त एवं प्रक्रिया बनाये। सबसे महत्वपूर्ण यह कि हम युवाओं एवं समुदायों की सूची बनायें तथा वृक्षारोपण की विकास एवं वृद्धि का साधन बनायें। हमारे पास केवल एक ही ग्रह है कोई दूसरा बी ग्रह नहीं है।

आर्ट ऑफ़ लिविंग के स्वयंसेवकों और सेवायोधाओं ने झारखंड के गांवों की यात्रा करके प्रोजेक्ट भारत के लिए प्रतिनिधि बनाया

आइए विशेषज्ञों से सीखें

सीएसआर के लाभ प्राप्त करना

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में शिक्षित, रमेश रमन ने अपने लंबे और गौरवमय करियर में विविध परियोजनाओं के नेतृत्व का समृद्ध अनुभव प्राप्त किया है। उन्होंने एक दशक से अधिक समय तक टाटा एक्सपोर्ट्स के साथ सेवा की और फिर दो दशक से अधिक समय तक भारत में तीन प्रमुख जर्मन कंपनियों का प्रतिनिधित्व किए। वर्ष २००० में, उन्होंने द आर्ट ऑफ लिविंग के साथ सेवा की शुरुआत की और एक समय ६ वर्षों तक महाराष्ट्र अपेक्स बॉडी के सदस्य रहे, जिसके तहत उन्होंने राज्य भर में विभिन्न सामाजिक विकास और सेवा परियोजनाओं को चलाने की पहल की। २०१५ तक, उन्होंने द आर्ट ऑफ लिविंग एपेक्स के कॉर्पोरेट प्रशिक्षण प्रभाग में अपने सीईओ के रूप में कार्य भार संभाला। तब से उन्होंने द आर्ट ऑफ़ लिविंग से जुड़ी गैर-लाभकारी संस्था इंटरनेशनल एसोसिएशन फ़ॉर ह्यूमन वैल्यूज़ (IAHV) के सीईओ सीएसआर के रूप में कार्यरत हुए। उस क्षमता के अन्तर्गत वह वर्तमान में ५० से अधिक कॉरपोरेट संस्थाओं के साथ मिलकर अपनी सीएसआर पहल के तहत १०० से अधिक परियोजनाओं का समन्वय कर रहें है।

डॉ. हाम्पी चक्रवर्ती के साथ बातचीत में आई.ए.एच.वी. के मुख्य कार्यकारी अधिकारी रमेश रमन ने सामाजिक विकास परियोजनाओं में सीएसआर निधियों के प्रयोग पर प्रकाश डाला

■ **सामाजिक विकास के क्षेत्र में सीएसआर फंडों के खुलने से क्या फर्क पड़ा है?**

सीएसआर फंड ने वास्तविक एनजीओ के लिए सामाजिक विकास के क्षेत्र में धन निधि की आवश्यकता को पूरा करने के लिए अवसरों की एक बड़ी खिड़की खोली है। कॉरपोरेट सेक्टर अब एनजीओ को साझेदार और सहयोगी के रूप में देखता है। दान करना अब केवल चेक को बांटना नहीं रहा, बल्कि सही समय पर जरूरतमंदों तक सही तरह की मदद सुनिश्चित करने का एक संरचित तरीका है।

> *''दान करना अब केवल चेक बांटना नहीं रहा, बल्कि सही समय पर जरूरतमंदो तक सही तरह की मदद सुनिश्चित करने का एक संरचित तरीका है।''*

■ **क्या कॉरपोरेट कम्पनियों और गैर-सरकारी संगठनों के साथ आने से सामाजिक कल्याण के प्रति अधिक जागरूकता और संवेदनशीलता लाने वाला एक अनूठा सामाजिक संबंध बना है? यदि हाँ, तो कैसे**?

अब कंपनियों को गतिविधियों की निगरानी के लिए बोर्ड स्तर पर एक सीएसआर समिति का गठन करना अनिवार्य है। यह खुद डोनर कम्पनियों में काफी जागरूकता पैदा करता है।

एनजीओ को भी धन का उपयोग करने में अधिक जिम्मेदार बनना होगा और दिए गए प्रत्येक रुपये का हिसाब देना होगा। यह अधिक जागरूकता पैदा करता है और यह भी सुनिश्चित करता है कि संसाधनों का उचित तरीके से उपयोग किया जाए। कॉरपोरेट कंपनियां यह सुनिश्चित कर रही हैं कि एनजीओ अधिक पेशेवर बनें जो बदले में पूरे कार्यक्षेत्र को अधिक उत्पादक बनाने में मदद करेगा।

■ **आई.ए.एच.वी. ने सीएसआर फंड के अवसरों का लाभ कैसे उठाया है?**

द आर्ट ऑफ लिविंग का एक हिस्सा होने के नाते आइ.ए. एच.वी को परियोजनाओं के कार्यान्वियन पहलुओं में एक तीव्रता मिली है। एक विस्तृत स्वयंसेवक के वजह से अपेक्षाकृत कम समय में भारत के दूरदराज के हिस्सों में परियोजनाओं को शुरू करने में आई.ए.एच.वी. को बहुत मदद मिली है। ४ साल की कम अवधि में आईएचवी ने एमएनसी क्षेत्र से ६० से अधिक कॉर्पोरेट संस्थाओं के साथ ३०० से अधिक परियोजनाओं का प्रबंधन किया है। ९०प्रतिशत से अधिक व्यवसायदोहराए गए है जो ग्राहकों की संतुष्टि के उच्च स्तर को दर्शाता है।

■ **कॉरपोरेट बॉडी के साथ प्रोजेक्ट लाइजन शुरू करने के लिए किस तरह के मापदंडों को ध्यान में रखा जाना चाहिए?**

यह काम पेशेवरों पर छोड़ना ही सबसे अच्छा है। आई.ए.एच.वी. के पास लोग प्रशिक्षित हैं और हमें उचित संपर्क सुनिश्चित करने के लिए किसी भी व्यक्ति की सहायता करने में खुशी होगी।

■ **सीएसआर फंड के साथ काम करने में क्या चुनौतियां हैं और आप उन्हें कैसे दूर करते हैं?**

जैसा कि मैंनें पहले भी कहा कि सीएसआर अब केवल चेक भरने की क्रिया नहीं है, अपितु इसमें कुछ ऊचें दर्जे की व्यवसायिकता की आवश्यकता है। ए.यू.एम.(Assets Under Management) अर्थात सम्पत्ति प्रबन्धन, कम्पनीयां आपपर विश्वास करती हैं तथा अपको भी उन्हें विश्वास दिलाना है, कि भुगतान एवं दूसरे पहलूओं का ध्यान रखा गया है। आई.ए.एच.वी. द्वारा एक मजबूत सहायक कार्यालय बनाया गया है ताकि सेल्स एवं प्रोजेक्ट स्टाफ को उचित सहायता मिल सकें। बहुत सारा परिश्रम तो विभिन्न स्तरों पर परियोजनायें बनाने पर लगता है। जैसे की प्रस्तवित स्तर, अनुमोदन स्तर, कार्यावित करने का स्तर एवं सूचना देने का स्तर तथा अन्त में इन सब के प्रभाव का आकलन स्तर होता है।

आप हमारे स्वयंसेवक जो इस क्षेत्र में काम करना चाहते है, उन्हें क्या मार्गदर्शन देना चाहेंगें?

उन्हें हमसे संपर्क करना चाहिए, प्रशिक्षित होना चाहिए और फिर उसमें प्रवेश करना चाहिए। आपको उन गलतियों को दोहराने की ज़रूरत नहीं है, जो हम में से अधिकांश लोग एक नए प्लेटफ़ॉर्म में जाते समय करते हैं। आई.ए.एच.वी. आपको मार्गदर्शन करेगा और सभी इच्छुको के लिए यात्रा लाभकर बना देगा।

9 वर्ष बाद मान तालुका का जल संकट समाप्त

आर्ट ऑफ लिविंग का जल संरक्षण परियोजना इस क्षेत्र के २२,००० से अधिक कृषकों की पानी की समस्या भी हुई दूर

| रुचिरा रॉय

सतारा (महाराष्ट्र)। ११ दिसम्बर २०१९ को दहिवड़ी में युक्तिपूर्वक महत्वपूर्ण बांध जलाशय (जल के बहाव को नियंत्रित करनेवाला एक छोटा सा बांध) का उद्घाटन करते हुए गुरूदेव श्री श्री रविशंकर ने कहा, कि कोई भी महान कार्य सम्भव नहीं हो सकता, जब तक हमसब एकसाथ नहीं हो सकते।'' इस क्षेत्र की नदी पिछले ९ वर्ष से सूखी हुई थी और आस पास के गांवों में लोग जल के लिए केवल टैंकरों पर निर्भर थें, जिन्हें प्रतिदिन १६६ टैंकरों की आवश्यकता होती थी।

आर्ट ऑफ लिविंग द्वारा निर्मित बांध में २५ करोड़ लीटर जल संग्रहित है और हाल में हुई बारिश से जल बांध के ऊपर भी बह रहा है और नदी बह रही है। दहिवड़ी के ग्रामीणों के पास अब उनकी जरूरतों से अधिक जल है। समाज सशक्तिकरण प्रयासों से इस प्रोजेक्ट ने आप पास के गांवों से २२,००० लोगों को लाभान्वित किया है। आर्ट ऑफ लिविंग ग्रामसमुदाय के लोगों को संगठित करने में सफल हुआ है। जिसके कारण ७० वर्ष उपरान्त गांव को जल संकट से मुक्त करने के लिए ग्रामवासी एक हो गये।

''अकेले सरकार सब कुछ नहीं कर सकती, हम सरकार से सहायता ले सकते हैं परन्तु हमें वह सब स्वयं अवश्य करना चहिए जो हम कर सकते हैं, तभी इस प्रकार के महत्वपूर्ण कार्य को पूरा किया जा सकता है। आप सब ने मिलकर इसे सम्भव बनाया है।'' आज दहीवाड़ा में जल से लबालब भरे नदी के प्रसंग में गुरूदेव ने कहा।

दहीवाड़ा मान तालुका के ८० गांवों में से एक है जहॉ पर गुरूदेव के मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से आर्ट ऑफ लिविंग ने सक्रीय होकर कार्य किया। जल संकट को कम करने के लिए जल संचय की क्षमता को बढ़ाया तथा सद्भाव पूर्ण विकास के लिए ग्रामीण समुदाय को संगठित किया।

''इस भूमण्डल पर नदी का प्रवाह वैसा ही है, जैसे हमारे सांस का प्रवाह हैं।'' ''जिस प्राकर सांस के बिना जीवन नहीं है, उसी प्राकर यदि धरती पर नदियां ना बहें तो वृक्ष व फसलें भी नही उग सकतीं। तब मानव जीवित नही रह सकता। नदियां हमारे जीवन का आधार हैं।''

परियोजना का लक्ष्य मान तालुका में लम्बे समय से चले आ रहे जल संकट को दूर करने के लिए बड़े स्तर पर सामुदायिक प्रयास शुरू कराना है। क्योंकि पश्चिमी घाट पर कम वर्षा वाले क्षेत्र में स्थित होने के कारण यहॉ वर्ष बहुत कम होती है। इस प्रस्ताव में समाविष्ट है- आम जनता में संवेदीकरण, ग्राम पंचायत एवं समुदाय के मुख्य लोगों के साथ भागीदारी ताकि उनके सहयोग से योजना बना कर समस्याओं के समाधान को कार्यान्वित किया जा सके।

ज्ञान के मोती

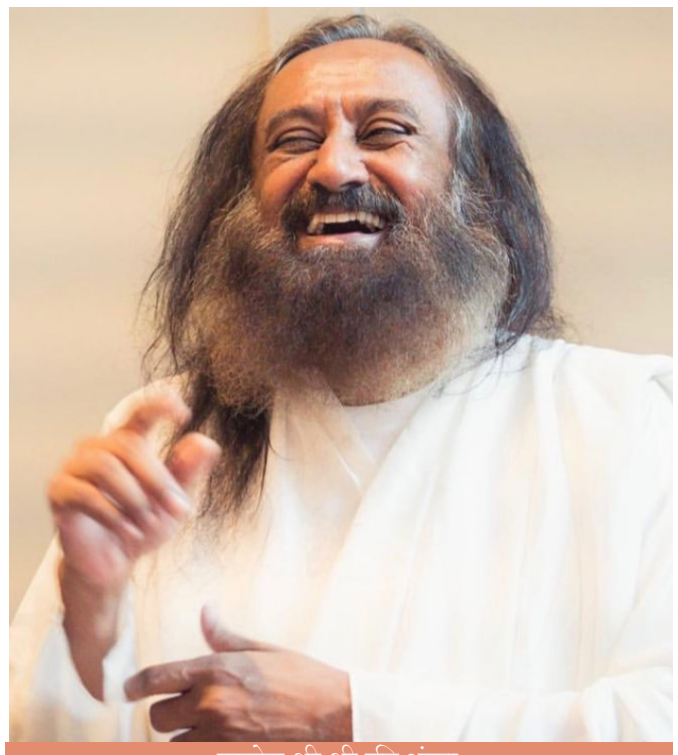

गुरूदेव श्री श्री रवि शंकर

नववर्ष 2020 शुभ हो

नववर्ष एक ऐसा समय है, जब समस्त विश्व उत्सव मनाने की भावना से घिरा होता है, यह एक ऐसा अवसर भी है, जब हम बीते वर्ष पर चिन्तन करें और जाने कि उस वर्ष हमने क्या सीखा। जीवन में घटनायें सीखने एवं भुलाने के लिए होती है। सीखने के लिए ताकी हम उसे दुबारा न दुहरायें तथा भूलने के लिए ताकी वे हमें दुःखी (व्यथित)न करें।

चलते रहो।

हमारे जीवन की सभी पिछली घटनाएं कभी-कभी केवल एक सपने से ज्यादा कुछ नहीं होती हैं। जीवन के इस स्वप्न-स्वरूप के बारें में भी बुद्धि जागरूक हो रही है, क्योंकि यह अब सामने आ रही है। यह जानने के बाद जबरदस्त आंतरिक शक्ति मिलती है, और बाहरी गड़बड़ी से दुखी होने का साहस। इसी समय, घटनाओं का जीवन में अपना स्थान है। हमें उनसे सीखने और चलते रहने की जरूरत है। अतीत को गिराओ, ताजा और जीवंत बनो

जो बीत गया उसे भूलें, फिर से ताजा होकर जिएं। प्रायः लोग कहते हैं अतीत से शिक्षा लें, मैं कहता हूँ बस सब कुछ छोड़ दो। अतीत से शिक्षा लेने का अर्थ है, अभी भी बीते समय में रहना उन्हीं अनुभवों के साथ। मैं कहता हूँ कि बिल्कुल खाली एवं रिक्त हो जाएं, सहज रहो। आपने अतीत से जो सीखा है, वह सीमित समय के सीमित दृश्य हैं। मैं कहता हूँ कि उसे बिल्कुल छोड़कर ताजा एवं सजीव हो जायें। ऐसा न सोचें कि ये कोई दूसरा ज्ञान है। ज्ञान को साबुन की तरह कहा जाता है इसे लगाये एवं धो डालें। परन्तु इसे धो डालने के लिए पहले इसे लगाना भी होगा।

आप आयु में जितना वृद्ध होते हैं, उतना ही उत्साह में युवा हो जाते हैं

मैं आशा करता हूँ कि बीते हुए वर्ष ने और अधिक युवा बना दिया है। युवा होने का संकेत, और अधिक चुनौतियां लेना और उत्साही होना है। उत्साह को कई प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है परन्तु जब तक वो आप में है आप आगे बढ़ रहे हैं। आप जैसे जैसे वृद्ध होते है अध्यात्मिकता के मार्ग पर अधिक युवा हो जाते हैं।

जीवन चुनौतियों और आराम का मिश्रण है

समान्यतः मस्तिष्क इच्छा करता है कि सब कुछ सहज से हो जाये। और जैसे जैसे आप वृद्ध होते है आप संघर्ष नही चाहते। संघर्ष का अर्थ है परिश्रम - उतना परिश्रम जिससे सब सहज और आसान हो जाये। जीवन दोनों का मिश्रण है। संघर्ष एवं सुविधा। यदि आप सदा आराम से रहेंगें तो आप जड़ता में चले जोयेंगें आप में निष्क्रियता आ जायेगी। आप के सही क्षमता का पता ही नही चलेगा। दूसरी ओर, यदि जीवन में केवल चुनौतियाँ हैं, तो आप थक जायेंगे एवं जड़ अथवा खाली हो जायेंगे। परन्तु प्रकृतिक नियम ऐसा हैं कि किसी भी व्यक्ति का जीवन केवल संघर्षमय या आरामदायक नहीं हो सकता।

चुनौतियों को स्वीकार करने का संकल्प लें

उन्हें मित्र बनायें जो व्यवहार से अधिक मैत्रीपूर्ण नहीं हैं। चुनौतियां आपके छिपी हुई प्रतिभा को निखारता है इसलिए उसका स्वागत करें। मैत्री पूर्ण व्यवहार करने वाले व्यक्ति के साथ मैत्री करना आसान है। जो मैत्रीपूर्ण नहीं है उनसे मैत्री करना ही चुनौती है। मैं आपसे चुनौतियों को सामना करने का आग्रह करूंगा। उन्हें मित्र बनाये जो अधिक मैत्रीपूर्ण नहीं है। इस कार्य के लिए प्रतिबद्ध हो जायें।

अपना कैलेंडर भरें ज्ञान एवं प्यार को फैलाएं

इस वर्ष, अपने कैलेंडर को सूनियोजित करें ताकि आप ध्यान, ज्ञान एंव सेवा के लिए समुचित समय निकाल सकें। यदि आप अपने उपहार स्वयं तक रखते है तो जीवन रूक जाता है। यदि आप साझा करते है तो जीवन प्रवाह सुगम हो जाता है। यदि संसार में अपना जीवन दूसरों की सेवा में लगाते है तो आप अति धनवान बन जाते हैं। यदि आप अपने तक सीमित रहते हैं तो जीवन घिसटने लगता है तथा भार बनकर दफना देता है। यदि आप स्वयं को भटका हुआ महसूस करें तो यह समय है जीवन को बाहर लाने का। तब आपको लगेगा की जीवन बहुत सार्थक है। उड़ता है तो आप भी उसके साथ उड़ने लगेंगे। अपने कैलेंडर इसी के अनुसार नियोजित करें परन्तु स्वयं लचीले रहें। प्रकृति आप को लचीला बनाती है परन्तु ये नहीं कि आप अपनी प्रतिबद्धता छोड़ दें।

योजना, प्रतिबद्धता एवं लचीलापन ये तीनों का इकट्ठा होना बहुत महत्वपूर्ण है।

मैं आपको नव वर्ष की बहुत बहुत शुभकामनाएं देता हूँ।

(बीते वर्षों में गुरूदेव के नववर्ष पर दिए गये संदेशों से उद्धृत)।

विशेष सेवाएं

निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर में 500 की जाँची आँखें

आर्ट ऑफ लिविंग और गुवाहाटी के नीलबारी लॉयन्स क्लब ने शंकरदेव नेत्रालय के संयुक्त तत्वाधान में निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का अयोजन किया। यह कार्यक्रम नलबारी जिले के घोगरापारा हाई स्कूल में अयोजित हुआ था। आर्ट ऑफ लिविंग प्रशिक्षक अमरेन्द्र कलीता ने बताया कि इससे लगभग ५०० लोगों को लाभ मिला। जाँच में पाये गये १०३ मोतियाबिन्द को हटाने के लिए मरीजों का गुवाहाटी स्थित शंकरदेव नेत्रालय में ऑपरेशन कराया जायेगा।

बच्चों एवं अभिभावकों मिले गर्म कपड़े

राजस्थान के आर्ट ऑफ लिविंग आबूरोड़ परिवार ने १९ दिसम्बर को आदर्श विद्या मन्दिर गांधीनगर आबूरोड़ द्वारा संचालित संस्कार केन्द्र के बच्च्यों एवं अभिवाको को सर्दी से बचाव के लिए कम्बल का वितरण किया।

उत्तराखण्ड की आर्ट ऑफ लिविंग अल्मोड़ा टीम ने १४ दिसंबर को जिला अस्पताल अल्मोड़ा में रक्तदान शिविर का आयोजन किया। शिविर से पहले जनजागरूकता रैली निकाली गई। नुक्क नाटकों के माध्यम से भी लोगों को प्रेरित किया गया। इस शिविर में ब्लड बैंक की क्षमता और जरूरत को देखते हुए ५१ यूनिट रक्त दानस्वरूप लिया गया।

रक्तदान और उससे जुड़े मिथकों को दूर किया

छत्तीसगढ़ की जहाँ आर्ट ऑफ लिविंग रायपुर की युवा इकाई ने मैग्नेटो मॉल में २४ नवम्बर को रक्तदान के प्रति जागरूकता लाने के लिए 'सेवा की खुशबू' नामक इस रक्तदान कार्यक्रम में खुशहाल जीवन के तौर तरीकों पर सबका ध्यान केंद्रित किया। इस दौरान रक्तदान को लेकर बनी कुछ गलत अवधारणाओं को दूर करने नुक्कड़ नाटक, डांस, सिंगिंग, रॉक म्यूजिक शो और विशेष वीडियो जैसे विविध कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए। इसके बाद रक्तदान शिविर में आर्ट ऑफ लिविंग के युवा कार्यकर्ताओं द्वारा १०० युनिट ब्लड का संग्रह हुआ। ये रक्तदाता 'ब्लड मित्र' ऐप के जरिए जुटे थे। जिसे युवा इकाई द्वारा बनाया गया है।

ठंड से ठिठुरते लोगों को मिली राहत

रॉची(झारखण्ड)। हालही में झारखण्ड में बारिश से बढ़ती ठण्ड स्थिती को देखकर स्थानीय कर्मयोग टीम ने रॉची व आसपास के क्षेत्रों में जरूरतमंदों को कम्बल बाँट रही है। रॉची के अनगड़ा प्रखंड के सुदूर गाँव नवागढ़ में प्रवीण कुमार और अपैक्स मेंबर सुनील कुमार गुप्ता के नेतृत्व में गरीब बूढ़े को चयन कर ७५ कम्बल वितरित किया गया। अभी तक इस सेवा योजना द्वारा लगभग ५०० कम्बल बाँटें जा चुके है। अन्य राज्यों में भी कई स्थानों पर कम्बल व गर्म कपड़े बाँटें जा रहे हैं।

पाली में रक्तदान शिविर

कोरबा में आर्ट ऑफ लिविंग शाखा पाली एवं विनायक हॉस्पिटल पाली के संयुक्त तत्वाधान में ८ दिसम्बर को स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें ५८ दाताओं ने रक्तदान किया। आर्ट आफ लिविंग के स्थानीय प्रशिक्षक संतोष भावनानी और मनोज ने इस आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। १७ नवम्बर को बागबहरा में गुरूनानक देव की जयन्ती के अवसर पर ७७ युनिट रक्त इकट्ठा किया गया था। इस शिविर को आर्ट ऑफ लिविंग परिवार बागबहरा ने श्री गुरूसिंह सभा, युवा खालसा दल के संयुक्त तत्वाधान में अयोजित किया था।

बच्चों को बांटी शिक्षण सामग्री

आबूरोड (राजस्थान)। आर्ट ऑफ लिविंग परिवार गोविंद धाम आदर्श विद्या मंदिर स्कूल की ओर से संचालित संस्कार केंद्र में २ दिसम्बर को बच्चों के लिए पाठ्य सामग्री का वितरण किया। इस मौके संयोजिका संगीता अग्रवाल ने बच्चो शिक्षा का महत्व बताया। इस मौके बच्चों को पाठ्य सामग्री व चॉकलेट का वितरण किया।

2019 के कुछ स्मरणीय पल

७ जनवरी, २०१९ को जर्मनी की राजधानी बर्लिन में वर्ष का पहला सामूहिक ध्यान सत्र का आयोजन हुआ।

गुरुदेव ने २५ जनवरी, २०१९ को मुंबई में विश्व भर से आये न्यूरोसर्जनों के सम्मेलन का उद्घाटन किया।

९ फरवरी, २०१९ को महाराष्ट्र के वातुर जिले में आयोजित एक कृषि मेले में किसानों ने जैविक खेती से मिली अपनी सफलता की कहानीयों को साझा किया

१ मई २०१९ को डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम तकनीकी विश्वविद्यालय, लखनऊ में बोलते हुए गुरूदेव ने कहा 'विश्वविद्यालयों का उद्देश्य उत्साह, धैर्य, सृजनात्मकता और करुणा जैसे गुणों के साथ व्यक्तित्व का निर्माण करना है, जिसकी सार्वभौमिक रूप से सराहना की जाती है।' विश्वविद्यालय के छात्रों और संकायों के लिए आर्ट ऑफ लिविंग द्वारा अयोजित की जाने वाली कार्यक्रमों के लिए एमओयू पर हस्ताक्षर किए गये।

गुरुदेव ने ५ मई, २०१९ को केरल के कोट्टायम के ऑर्थोडॉक्स चर्च सेंट जॉर्ज से प्रपत्र प्राप्त किया।

१० जुलाई, २०१९ को गुरुदेव वेनेजुएला में बातचीत के माध्यम से अहिंसा और शांति बहाल करने के सिद्धांतों पर चर्चा करने के लिए वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मदूरो से मुलाकात की।

२३ जुलाई २०१९ को गुरूदेव कॉलोराडो के डेनवर में 'नेषलन समिट फॉर मेंटल हैल्थ' में सम्मलित हुए। इस सम्मेलन में हिंसा, अवसाद और आत्महत्या सम्बन्धी प्रवृत्तियों के समाधान के लिए सभी विशेषज्ञ एक साथ आये। इस सम्मेलन का समापन गुरूदेव के नेतृत्व में विभिन्न शहरों में विशाल ध्यान सत्र द्वारा हुआ।

२४ जुलाई, २०१९ को, अमेरिका मेडिटेट्स कार्यक्रम में लाखों लोग शामिल हुए, जो एक साथ पूरे अमेरिका के १२९ शहरों में आयोजित किया गया था। कॉलोराडो के डेनवर शहर में अयोजित मुख्य कार्यक्रम में नेताओं के प्रभावशाली भाषण एवं प्रसिद्ध कलाकारों द्वारा संगीत के प्रदर्शन भी किया गया।

२२ सितंबर, २०१९ को, गुरुदेव ने नोबल पुरूस्कार विजेता लॉरेट अल गोर के क्लाइमेट रियलिटी प्रोजेक्ट, इंडिया कार्यालय के सहयोग से विकसित श्री श्री यूनिवर्सिटी रिसोर्स सेंटर फॉर क्लाइमेट चेंज एंड सस्टेनेबिलिटी एजुकेशन एंड प्रैक्टिसेस का शुभारंभ किया।

११ अक्टूबर, २०१९ को बेंगलुरु के आईआईएससी में संकाय सदस्यों और छात्रों को संबोधित करते हुए गुरुदेव ने कहा ''किसी भी प्रकार का पूर्वाग्रह वैज्ञानिक सोच के लिए हानिकारक है। किसी भी वस्तु को प्रमाणित अथवा अप्रमाणित करने के लिए व्यक्ति को खुले दिमाग का होना चाहिए। पूरी तरह से परीक्षा के बिना कुछ भी करना वैज्ञानिक दृष्टि से सही नहीं है।''

गुरुदेव ६ नवंबर, २०१९ को एलन इंस्टीट्यूट, इंदौर के ७००० से अधिक छात्रों से मिले। उन्होंने छात्रों के प्रश्नों का जवाब दिया और पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ जीवन से सम्बन्धित व्यापक दृष्टिकोण देने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि शिक्षा में एक आध्यात्मिक पहलू छात्रों को यह जानने में मदद करता है कि असफलता से कैसे निपटें, सही निर्णय लेने का तरीका, कौन से मानवीयमूल्यों को बढ़ाये आदि में सहायता करता है।

अयोध्या मामले में समाधान के लिए गुरूदेव ने २००३ में कोर्ट के बाहर ३ सूत्रीय फॉर्मूले का प्रस्ताव रखा था। ९ नवम्बर, २०१९ को सुप्रीम कोर्ट ने गुरूदेव के २००३ के फॉर्मूले के अनुरूप फैसला सुनाया।

१५ नवम्बर २०१९ को वेटिकन में बच्चों के आत्म सम्मान पर अयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित किया। कार्डिनल पारोलिन, स्वीडन की महारानी और सम्मानीय शेख बिन जा येद अल नाह्यान, उप प्रध ानमंत्री अरब अमीरात और अन्य गणमान्य इस अवसर पर उपस्थित रहे।

६ दिसम्बर २०१९ को गुरूदेव ने जम्मू में लेफ्टिनेंट गवर्नमेंट माननीय जी.सी. मुर्मू से मिलें तथा श्री माता वैष्णों देवी श्राइन बोर्ड की बैठक में भाग लिया।

आदिवासियों की सेवा में समर्पित

| डॉ. हाम्पी चक्रवर्ती

हाथी और कई अन्य जानवरों के बीच इस वन क्षेत्र मेंमुथुवन समुदाय के लगभग ७५ परिवार रहते थें।

अनिल कुमार

आप का सबसे बड़ा दुःस्वप्न क्या हो सकता है? चित्रकला प्रतियोगिता में पुरस्कार पाना! अनिल ने आगे बताया, '' पुरस्कार पाने का मतलब यह है कि आपको मंच पर जाना है और पूरा विद्यालय आपको देख रही है और आपको उन सबके सामने कुछ न कुछ बोलना है।'' युवा अनिल कुमार ने अपने दोस्त को अपने स्थान पर पुरस्कार पाने के लिए कहा। अनेक वर्षो के बाद उनके डीएसएन के अंतिम दिन टीचर ने उनको नवचेतना मैनुअल शौंप नवचेतना लेने के लिए कहा। अनिल ने इसे लेने से इंकार कर दिया क्योंकि इसमें लोगों के सामने बोलना और बताना था।

जीवन में उसके लिए कुछ अलग योजनाएं थी। उनका केरल के इडुक्की जिले दूरस्थ आदिवासी क्षेत्र में सम्मान हुआ, जहां पर आज तक कोई विकास नहीं हुआ था। उन्होंने अनुभव किया कि इस क्षेत्र में भी गुरुदेव श्री श्री रविशंकर का ज्ञान पहुंचाना है और इस प्रकार सोचकर उन्होंने वहां पर नव चेतना शिविर लेने की योजना बनाई। लेकिन स्थान के दूरस्थ होने के कारण वहां पर प्रशिक्षक का पहुंचना बहुत मुश्किल था। उन्होंने किसी तरह एक मंदिर पर टीचर को बुलाकर शिविर आयोजित करवाया। लोग तो अपने समय पर पहुंच गए लेकिन दूरी होने के कारण शिक्षक समय पर नहीं पहुंच पाए और सारा कार्यभार अनिल के कंधों पर आ गया और उनको शिविर लेना पड़ा। उनकी सहायता करने के लिए वहां पर कोई उपस्थित भी नहीं था। वे अपने सबसे बड़े डर से बाहर निकल कर अपने काम में लग गए। गुरुदेव के शब्द उन्हें याद आए, चाहे आप एक शब्द भी ना बोल पाए, लेकिन यदि आप गुरु के साथ हो तो आप हजारों के सामने भी बोल सकते हैं। उन्होंने तुरंत ही नवचेतना शिविर का मैनुअल निकाला। अनिल आसपास के क्षेत्र के रहने वाले लोगों के लिए नव चेतना शिविर आयोजित करने लगे। शिविर में चाहे ६ - ७ लोग ही क्यों ना हो, वे शिविर जरूर आयोजित करेंगे। जल्दी ही लोगों को इसका फायदा समझ में आने लगा और ज्यादा से ज्यादा लोग इसमें जुड़ने लगे। उन्होंने हैप्पीनेस प्रोग्राम का आयोजन करने की सोची। लेकिन वहां के लोग आर्थिक रूप से अत्यंत पिछड़े हुए थे और वे हैप्पीनेस प्रोग्राम नहीं कर सकते थे। तो उन्होंने उनको एक गुल्लकसभी ग्रामवासियोंको दिया और कोर्स के लिए धन बचाने के लिए प्रेरित किया। ६ महीने के भीतर ही वहां पर पहला हैप्पीनेस प्रोग्राम आयोजित हुआ और इसके बाद अनेक वाईएलटीपी प्रोग्राम भी वहां होने लगे।

इसके बाद वे अपने साथी टीचर्स के साथ और भी दूरस्थ और आदिवासी क्षेत्र में जाने लगे। रास्ते बहुत कठिन थे कई कई बार तो जंगल में ३ से ४ घंटे चलना पड़ता था और वहां पर भी बहुत कम लोग ही एकत्रित हो पाते थे। उन्होंने सरकारी अस्पतालों और आदिवासी लड़कियों के लिए चल रहे महिला संख्या प्रोग्राम और आदिवासी लड़कों के हॉस्टल में कोर्स ऑर्गेनाइज करवाएं। इन कोर्सेज के कारण अनिल उनसे जुड़ने में सफल हुए और उनकी आवश्यकताओं को समझ कर उनके जीवन को बेहतर बनाने में लग गए। उनकी मुलाकात मदानन से हुई जिन्होंने एक और आदिवासी क्षेत्र कोझियाला कुड़ी में शिविर आयोजित करने के लिए कहा, वहां पर जाने के लिए बस से ढाई घंटे लगते थे और एक घंटा जंगल में से पैदल चलना पड़ता था। वहां पर मुथुवन समुदाय के ७५ परिवार रहते थे, जिनका जीवन वन क्षेत्र पर आधारित था और उनके पास हाथी तथा अन्य जानवर थे। इस क्षेत्र के कुछ अन्य लड़के लड़कियों ने प्रोग्राम कर रखे थे। अनिल उन सब की सहायता लेकर वहां के जीवन के स्तर को उठाने के लिए प्रयासरत हो गए। आज आलाकुडी केरल का पहला ऐसा गांव है जहां पर हर परिवार का सदस्य गुरुदेव के ज्ञान से जुड़ गया है। २०१८ में जब केरल में बाढ़ आई तब आर्ट ऑफ लिविंग ने यहां पर श्री अभयम् प्रोजेक्ट चलाकर लोगों की सहायता की। इससे अनिल को अन्य सेवा कार्य आरंभ करने में सहायता मिली और अन्य आसपास के आदिवासी क्षेत्रों में जैसे रिंकू डी और चोकरामुदी कुड़ी में भी वे पहुंच पाए। अनेक वर्षों के पश्चात अनिल ने यहां पर बड़ी संख्या में वाईएलटीपी आयोजित करके अनेक सामुदायिक नेताओं का निर्माण किया।

इस यात्रा में उनको बहुत धैर्य और सहनशीलता की आवश्यकता थी। अनिल के साथ उनकी पत्नी और उनके बच्चे दृढ़ता के साथ खड़े थे और उनकी कठिनाइयों के साथी थे। इससे उनमें आत्मविश्वास बढ़ा। उनकी हार्डवेयर की दुकान और आर्थिक स्थिति बहुत बड़ी चुनौती थी। लेकिन अनिल ने इस बात की कोई चिंता नहीं की। आज आर्ट ऑफ लिविंग टीचर के रूप में वह उस क्षेत्र में बड़े उद्देश्य के साथ हैं और अपने छोटे-छोटे माध्यमों से वहां के जीवन में परिवर्तन ला रहे हैं।

THE ART OF LIVING

प्रोजेक्ट भारत

डाऊनलोड व्यक्ति विकास प्रतिनिधि ऐप्लिकेशन और प्रतिनिधि को नामांकीत करे

प्रातिनिधि को लाभ
- सबसे बड़ी एनजीओ का हिस्सा बनने का अवसर
- समाज में योगदान के लिए मंच
- सतत विकास के लिए मजबूत ढांचा

हेल्प डेस्क ईमेल pratinidhi@projects.artofliving.org
संपर्क: 080-61125607

29 राज्य, 7 केंद्र शासित प्रदेश, 7 लाख+ गांवों और शहरों के वार्ड , 35 लाख+ प्रतिनिधि

लक्ष्य
राष्ट्र में सत्त्व की लहर और फिर से धर्म की स्थापना

सेवा टाइम्स

प्रकाशक :
कोमोडोर एच. जी. हर्षा
अध्यक्ष, व्यक्ति विकास केंद्र इंडिया

कन्सेप्ट
देबज्योति मोहन्थी

संपादकीय टीम
तोहेजा गुरुकर
डॉ हाम्पी चक्रबर्ती
राम अशीष

डिजाइन
सुरेश

संपर्क
Ph : 9035945982, 9838427209
Email : editor.sevatimes@yltp.vvki.org
sevatimes@yltp.vvki.org

Graphics credit: Freepik and www.flaticon.com